बजट से उम्मीदें

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की दूसरी पारी के पहले बजट पर देशभर की निगाहें टिकी हुई हैं. इस बजट में आगामी पांच सालों की नीतिगत दिशा और प्राथमिकताओं के निर्धारण की अपेक्षा की जा रही है. उद्योग जगत से लेकर उद्यमियों, कामगारों और किसानों की उम्मीदों को पूरा करने की चुनौती वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के सामने है. मौजूदा ठहराव से अर्थव्यवस्था को निकालकर फिर से गतिशील करने के लिए आर्थिक सुधारों पर ध्यान देकर निवेश और उपभोग बढ़ाने के साथ सामाजिक क्षेत्र में सार्वजनिक खर्च में बढ़ोतरी करने पर बजट का जोर हो सकता है. इससे बेरोजगारी की मुश्किल से निपटने में बड़ी मदद मिल सकती है, जो सरकार की चिंताओं में प्रमुख है. नीति आयोग की बैठक में प्रधानमंत्री के संबोधन तथा वित्त मंत्री के बयान से यह संकेत साफ है कि सरकार कृषि में बेहतरी के लिए ठोस पहल करेगी. किसान संगठनों और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के सुझावों तथा बीते पांच सालों में उठाये गये कदमों के अनुभव के आधार पर कृषि संकट के समाधान के समुचित उपायों की गुंजाइश है. ग्रामीण क्षेत्र में घटती मांग तथा कमजोर मॉनसून और जल-संकट को देखते हुए तात्कालिक और दीर्घकालिक नीतियों और कार्यक्रमों की आवश्यकता बहुत अधिक बढ़ गयी है. सरकार के पहले कार्यकाल में वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता को सुनिश्चित करने के लिए अनेक नीतियां लागू हुई थीं, जिनके सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं. इस कार्यकाल में भूमि सुधार, श्रम कानूनों में बदलाव, विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक नीति, शोध एवं अनुसंधान में निवेश, कराधान प्रणाली को सरल बनाना, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करना जैसे मुद्दों पर सरकार को निर्णायक रवैया अपनाना चाहिए. छोटे एवं मझोले उद्योगों, इ-कॉमर्स, कौशल-विकास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों की असीम संभावनाओं को वास्तविकता में बदलने के लिए भी बजटीय पहलकदमी की जरूरत है. उपभोग और बचत में लगातार कमी अर्थव्यवस्था के लिए चिंताजनक है. इस कारण वृद्धि दर में कमी आ गयी है. अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्थिति भी बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं है. अमेरिका द्वारा अनेक भारतीय वस्तुओं पर आयात शुल्क लगाने, व्यापार युद्ध तथा बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की आपसी रार से निवेश और निर्यात प्रभावित हो रहे हैं. हमारा व्यापार घाटा भी बढ़ रहा है. विश्व व्यापार संगठन में कृषि उत्पादों तथा इ-कॉमर्स पर विकसित देशों के अड़ियल रवैये से हमारे आर्थिक हित प्रभावित हो सकते हैं. मध्य-पूर्व में तनाव तेल की कीमतों पर असर डाल सकता है. हालांकि, प्रधानमंत्री और नीति आयोग निर्यात बढ़ाने का आह्वान करते रहे हैं और इस दिशा में सरकार सक्रिय भी है, पर इसके परिणाम देर से ही सामने आयेंगे. ऐसे में घरेलू बाजार में मांग और उपभोग बढ़ाने तथा बड़ी युवा आबादी को उत्पादकता से जोड़ने के फौरी उपायों की दरकार है.

घरेलू बाजार में मांग और उपभोग बढ़ाने तथा बड़ी युवा आबादी को उत्पादकता से जोड़ने के फौरी उपायों की दरकार है.

भारतीय उदारवादियों का दोहरा रवैया

प्रभु चावला
एडिटोरियल डायरेक्टर
द न्यू इंडियन एक्सप्रेस
prabhuchawla
@newindianexpress.com

उदारवादी धर्मनिरपेक्षवादियों के स्वप्निल संसार में अल्पसंख्यकों के सरोकार ही सर्वप्रमुख होते हैं. पर अब यह समुदाय सामाजिक, सियासी एवं आर्थिक रंगभेद का शिकार बन जाने की जोखिम में है. एक नये मध्य वर्ग और एक नव-महत्वाकांक्षी सहस्राब्दी के उदय के साथ उदारवाद एक विचार और आदर्श के रूप में अपनी वास्तविकता तथा प्रासंगकिता खो चुका है. वर्ष 2019 का जनादेश इसकी ताबूत में अंतिम कील की तरह ही था. अब वे अपनी हताशापूर्ण कोशिश के अंतर्गत पिछले कुछ सप्ताहों में हर वैसे अवसर का उपयोग करते हुए मोदीवाद और नया भारत के उनके ब्रांड को मिले जनादेश को मलिन करने में लगे हैं.

भारत-पाक क्रिकेट मैच के सैद्धांतिक पिच पर उनके 'नो बॉल' भारतीय 'कवर ड्राइव' के सामने विचलित हो गये. उदारवाद की मुहावरेदार कमेंटरी ने इस मैच को सिर्फ एक और आयोजन के रूप में लिया- 'क्रिकेटप्रेमी बेहतर टीम की हौसलाअफजाई करें.' उन्होंने यह मान लिया कि पाकिस्तान की टीम विराट कोहली की खूंखार टीम जितनी ही बेहतर है. उधर विश्व के विभिन्न हिस्सों से दस हजार भारतीय प्रशंसकों का विशाल दर्शक वर्ग कीमती हवाई टिकटों पर दिल खोलकर खर्च करते हुए यह मानकर मैच देखने लंदन पहुंच गया कि भारतीय टीम विश्व की सर्वश्रेष्ठ टीम से भी बेहतर है. पर बहुतेरे उदारवादी नेता और स्तंभकार-सह-तथाकथित क्रिकेट विशेषज्ञों ने पाकिस्तानी टीम की तारीफ के कसीदे गाने लगे. इसमें कोई संशय नहीं कि यह सिर्फ एक खेल ही था, मगर उदारवादियों ने एक शैतान देश के साथ शांति तथा संवाद के अपने आत्यंतिक लगाव की वजह से इसे अपने सैद्धांतिक एजेंडे को आगे बढ़ाने का बहाना बना लिया. मेनचेस्टर में जो कुछ हुआ, अब वह इतिहास का हिस्सा है. अमित शाह के शब्दों में यह एक घातक 22 गजी 'चोट' थी, जिसने पाकिस्तान के दंभ को चूर कर दिया.

मुस्लिमों पर नकारात्मक असर डालनेवाली घटनाओं के लिए 'बैटिंग' करते हुए बहुसंख्यक-बहुल संस्थाओं की निंदा करना उदारवादियों का एकमात्र खेल रह गया है. उदाहरण के लिए कोलकाता के डॉक्टरों पर हमले के सांप्रदायिक रंग की अनदेखी कर दी गयी. भीड़ द्वारा किसी पर हिंसक हमले की रिपोर्ट सुनकर उदारवादी क्षोभ से भर जाते हैं. ऐसे कुछ विरोध तो उचित होते हुए भी इसलिए पक्षपाती ही होते हैं कि जब ऐसी किसी घटना का शिकार कोई हिंदू होता है, तो उनका गुस्सा गायब हो जाता है. जब कट्टरवादी मुस्लिम दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं, तो इनकी उदारवादी चेतना नींद लेने लगती है.

भारतीय उदारवादियों ने उदारवाद की परिभाषा को पुनर्भाषित किया है. वे राज्य अथवा सैद्धांतिक नियंत्रण के विचार का विरोध करते हैं. मगर यदि उनके विचार भारतीय संदर्भ में विश्लेषित किये जायें, बहुमतवाद के प्रति उनकी आपत्ति का सरोकार अंततः संघ परिवार से संबद्ध किसी भी एवं सभी चीजों पर ही जा टिकता है. वे आर्थिक मामलों में कम से कम सरकारी हस्तक्षेप की वकालत करते हैं. फिर भी वे गरीबों को सब्सिडी का विरोध करते हुए अमीरों के लिए बड़े प्रोत्साहनों की सलाह देते हैं.

वे सार्वजनिक शिक्षा के लिए तो भारी सहायता सुलभ कराने की बातें करते हैं, किंतु अपने बच्चों को देश और विदेश के सबसे महंगे स्कूलों में पढ़ने भेजते हैं. वे आदिवासियों, मजदूरों, किसानों तथा गरीब महिलाओं के अधिकारों की रक्षा पर बोलते हैं, लेकिन स्वदेश और विदेशों में विलासितापूर्ण परिसंवादों में स्वयं को अंगरेजी में अभिव्यक्त करना पसंद करते हैं. ऐतिहासिक रूप से भारत में उदारवादियों का उदय सीधी तरह अल्पसंख्यकों के अवनति से जुड़ा रहा है. अधिकतर मुस्लिम आबादी मलिन बस्तियों में रहती है, राष्ट्रीय प्रतिव्यक्ति आय से कम उपार्जित करती है और सार्वजनिक संपत्तियों तक उनकी पहुंच सीमित होती है.

नया भारत नेहरू के उदारवादी ढांचे के अस्पष्ट भारत से रंग और शिल्प में बहुत भिन्न है. इस नयी पारिस्थितिकी से अपना तालमेल बिठाने हेतु भारतीय उदारवादियों को अपने अत्यधिक अहंकार के डीएनए की फिर से तलाश करनी होगी.

मगर यह निराशापूर्ण तथ्य भी इन उदारवादियों को पृथ्वी के चक्कर लगाते हुए अपने संकीर्ण नजरिये के श्रोताओं को आनंदित करने के उपाय और साधन तलाशने से नहीं रोकता. भारत के उच्चवर्गीय मुस्लिम नेतृत्व के उत्तरोत्तर बढ़ते सामाजिक-आर्थिक पराभव ने विदेशों में शिक्षित उच्चवर्गीय हिंदुओं के लिए जगह खाली कर दी, जो राज्य एवं उसके द्वारा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से नियंत्रित कई संस्थाओं द्वारा मुहैया सुविधाओं पर पलते रहे. उनकी संतानें सर्वोत्तम स्कूलों में दाखिल हुईं, उन्हें विदेशी छात्रवृत्तियां मिलीं और वे कमाऊ तथा प्रभावशाली पदों तक पहुंच गये. उन्होंने शैक्षिक संस्थानों, मीडिया तथा सांस्कृतिक संस्थानों के नियंत्रण थाम लिये और उनसे अपने आनुवांशिक उदारवादी एजेंडे के हित साधने लगे.

जो लोग एक कश्मीरी दहशतगर्द को गोली लगने पर तो चीख उठते थे, मगर कश्मीरी पंडितों को कश्मीर से हिंसक रूप से निकाले जाने पर उनके समर्थन से बाज रहे, वे ही अब निशाने पर हैं. जब पृथ्वी पर स्वर्ग सरीखी कश्मीर की वनाच्छादित घाटियां सीमापार के परजीवियों द्वारा अपनी शिकारस्थली बनायी जा रही थी, तो यहां तक कि नेहरूवादी भी चुप्पी साधे बैठे रहे. एक पक्षपातरहित मानवीयता का सवाल आज बहुत मौजूं बन गया है.

उनका खून तब क्यों नहीं खौला, जब 32-वर्षीया महिला पुलिस अधिकारी सौम्या पुष्करन को उसके ही एक सहकर्मी एजाज ने आग की लपटों के हवाले कर दिया? क्यों उन्होंने निर्धन हिंदुओं का बलात धर्मपरिवर्तन कर उन्हें मुस्लिम बनाने की रिपोर्टों को नजरअंदाज कर दिया? जब वे विजय माल्या और नीरव मोदी जैसों के खून के प्यासे बने बैठे हैं, तो क्यों बेंगलुरु के उदारवादी उन 26 हजार मुस्लिमों की तकलीफ से अछूते नजर आते हैं, जिनके पैसे एक छद्म बैंकर मुहम्मद मंसूर खान के फर्जीवाड़े के हवाले हो गये? क्यों ऐसी घटनाओं पर मीडिया में तीखी बहसें नहीं होतीं? यह एक विरोधाभास ही है कि जब कांग्रेस तथा वाम दल जैसी उदारवादी पार्टियों ने अपने बहुमत विरोधी रुख नरम कर लिये, तो उनके ये समर्थक अपनी अकड़ पर अब भी अड़े हुए हैं.

मैं अभी तक भी मोदी प्रभाव को नहीं समझ सका हूं. नया भारत नेहरू के उदारवादी ढांचे के अस्पष्ट भारत से रंग और शिल्प में बहुत भिन्न है. इस नयी पारिस्थितिकी से अपना तालमेल बिठाने हेतु भारतीय उदारवादियों को अपने अत्यधिक अहंकार के डीएनए की फिर से तलाश करनी होगी. बहुमत की लोकतांत्रिक आवाज को अपनी उच्च वर्गीयता तथा संकीर्ण संपर्कीयता से डराकर चुप कर देने का समय अब गुजर गया.

नुकसानदेह है अमेरिका-ईरान संघर्ष

आकार पटेल
कार्यकारी निदेशक,
एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया
delhi@prabhatkhabar.in

पिछले सप्ताह अमेरिका ने ईरान पर हमले की घोषणा की और फिर उसे वापस ले लिया. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि जब मुझे यह बताया गया कि इन हमलों के नतीजे में लगभग 150 ईरानियों की मृत्यु हो सकती है, तो मैंने ये हमले स्थगित कर दिये. उन्होंने इन हमलों के आदेश इसलिए दिये थे कि ईरान ने अपनी सीमा के निकट एक अमेरिकी सैन्य ड्रोन मार गिराया था.

अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन जैसे अपने प्रशासन के कुछ अधिक उग्र सदस्यों के साथ ही डोनाल्ड ट्रंप ईरान के साथ युद्ध के लिए उतावले-से रहे हैं. इस अमेरिकी रुख की वजह से पिछले सप्ताह कच्चे तेल की कीमतों में 10 प्रतिशत तक की वृद्धि भी हो गयी, जिसने भारत और उस जैसे वैसे राष्ट्रों के लिए मुश्किलें खड़ी कर दीं. प्रश्न यह है कि अमेरिका क्यों ईरान के साथ युद्ध के लिए उत्सुक है? इसका उत्तर पाना अथवा समझना आसान नहीं है. सभ्यताओं के संदर्भ में देखा जाये, तो ईरान पश्चिम का सबसे पुराना शत्रु रहा है. स्वयं यूनानियों के ही अनुसार, लगभग 2400 वर्ष पूर्व, पहले डेरिअस और फिर जेरजेस के नेतृत्व में ईरानी सेना ने यूनान पर हमला कर एथेंस को नष्ट कर दिया था. हेरोडोटस द्वारा लिखित इतिहास में इसका वर्णन है कि ईरानी सेना में बड़ी संख्या में भाड़े के भारतीय सैनिक शामिल थे.

प्राचीन कालीन इतिहास में अपने ऊपर ईरानी सम्राटों के प्रभाव के कारण यूनानी उनका जिक्र 'महाराजा' के नाम से करते रहे. सिकंदर या अलेक्जेंडर के नाम के साथ महान की उपाधि उसके द्वारा मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान और पंजाब की विजय की वजह से नहीं लगी थी, बल्कि वह इसलिए थी कि उसने स्वयं डेरियस तृतीय महान से इसे हासिल किया था. पंजाब से लेकर ईरान समेत तुर्की तक के सबसे बड़े हिस्से पर सेल्यूकस नाइकेटर (नाइकेटर का अर्थ विजेता है और जूतों का ब्रांड नाइकी भी इसी शब्द से संबद्ध है) शासन करने लगा. ईरानियों ने पार्थिया के शासक आर्ससीज के नेतृत्व में अपने देश को आजाद करा लिया, जो वर्तमान भारतीय पारसियों के ही धर्मावलंबी थे.

तीन शताब्दियों तक पार्थियन शासक पश्चिम की दूसरी सबसे बड़ी शक्ति रोम से युद्ध करते रहे. ईरानी विजेताओं का अगला वर्ग सेसानियों का था, जो सातवीं सदी में अरबों द्वारा ईरान की विजय तक ईरान पर शासन करते रहे. लगभग चार सौ वर्ष पूर्व ईरान सफाविदों के अंतर्गत शिया बन गया. भारत के लिए सबसे मशहूर ईरानी शासक नादिर शाह खुद सुन्नी था, जिसने मुगल साम्राज्य को समाप्त कर दिया.

आधुनिक काल में ईरानी सियासत में अमेरिका हस्तक्षेप करता रहा है. वर्ष 1953 में ईरान के निर्वाचित प्रधानमंत्री मुहम्मद मोसादिक को अमेरिकी खुफिया संगठन 'सीआइए' द्वारा निर्देशित तख्तापलट में हटा दिया गया, क्योंकि उन्होंने तेल कंपनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था. अमेरिका ने ईरान-इराक युद्ध को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करते हुए इराकी नेता सद्दाम हुसैन का समर्थन किया. बाद में, सद्दाम से उसके संबंधों में खटास आ गयी. वर्ष 1979 में, अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के समय तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर ईरानी क्रांतिकारियों ने कब्जा कर लिया और उन्होंने कई सप्ताहों तक दूतावास के कर्मियों को बंधक बनाये रखा. इसके बाद से अमेरिका ने ईरान के साथ कूटनीतिक संबंध बहाल नहीं किये. अमेरिका में रह रहे ईरानी नागरिकों के मामले पाकिस्तानी दूतावास द्वारा देखे जाते हैं. ईरान ने अपने परमाण्विक कार्यक्रमों को लेकर ओबामा प्रशासन के साथ एक समझौता संपन्न किया था और उम्मीदें जगी थी कि अंततः ये दोनों देश मित्र बन जायेंगे. किंतु ट्रंप के मनमाने नेतृत्व में ये उम्मीदें परवान नहीं चढ़ सकीं.

ईरान का राष्ट्रीय धर्म शिया इस्लाम है. शियावाद अपनी प्रकृति से ही निवृत्तिवादी है. उनका यकीन है कि 12वें इमाम मुहम्मद अल महदी, जो वर्ष 869 में पैदा हुए थे, मृत नहीं हैं, बल्कि उन्हें ईश्वर ने छिपा लिया है और एक खास वक्त वे पुनः प्रकट होंगे. वे उनकी वापसी का इंतजार कर रहे हैं. वर्तमान में जितने पाकिस्तानी अथवा कश्मीरी समूह भारत या भारतीय सेना के विरोध में खड़े हैं, उनमें से कोई भी शिया नहीं है. आज जिसे जिहादी आतंकवाद कहा जाता है, उसमें शियावाद का कोई भी अवयव शामिल नहीं है. फिर भी, ईरान सुन्नी समूहों समेत विभिन्न फिलिस्तीनी समूहों का समर्थक रहा है, जो सब इस्राइल का विरोध कर रहे हैं. ईरानियों का अमेरिका से कोई झगड़ा नहीं है, उसके साथ उनकी कोई सीमारेखा नहीं मिलती और अमेरिका के लिए उनसे नफरत की इसके सिवाय कोई और वजह नहीं है कि इस्राइल चाहता है कि अमेरिका ईरान के साथ कड़ा रुख अपनाये, क्योंकि वह इस्राइली कब्जे से फिलीस्तीन की आजादी का समर्थन करता है.

शिया कुछ और भी समूहों में विभाजित हैं, पर उनमें सबसे बड़ा ट्वेल्वर शिया या इमामिया शिया है, जिनके इमाम क्रमशः ईरान और इराक के गोम तथा करबला शहरों में रहते हैं. भारत का ईरान के साथ सभ्यतामूलक संबंध है. ईरान भारत की वर्तमान सरकार के मुस्लिम विरोधी रुख के बावजूद भारत का मित्र रहा है. यों तो वैश्विक स्तर पर भारत एक द्वितीय श्रेणी का देश ही ठहरता है, पर हमें अपनी शक्तिभर यह कोशिश करनी चाहिए कि अमेरिका और ईरान के रूप में हमारे दो मित्र देश आपस में एक अर्थहीन एवं अंततः भारत समेत सबके लिए हानिकारक संघर्ष की विभीषिका में न पड़ें. **(अनुवाद: विजय नंदन)**

ईरान ने अपने परमाण्विक कार्यक्रमों को लेकर ओबामा प्रशासन के साथ एक समझौता संपन्न किया था और उम्मीदें जगी थी कि अंततः ये दोनों देश मित्र बन जायेंगे. किंतु ट्रंप के मनमाने नेतृत्व में ये उम्मीदें परवान नहीं चढ़ सकीं.

बोधि वृक्ष

साधना मार्ग

ध्रुव ने जब साधना शुरू की थी, तब वह मात्र पांच वर्ष का था. पांच वर्ष का बालक तपस्या कर रहा था- कठोर तपस्या. देवता लोग नारद के निकट जाकर बोले- 'नारद जी! यह तो महासंकट है. इतना सा छोटा बालक और इतनी तीव्र साधना कर रहा है? हम लोगों का नाम-यश-प्रतिष्ठा सब समाप्त हो जायेगा. अब तो कोई हमें देखकर प्रणाम भी नहीं करेगा. सत्कार-मान भी नहीं देगा और न भोजन के लिए निमंत्रण देगा. बड़ी विपत्ति होगी.' नारद ने तब नारायण से परामर्श ली. नारायण ने कहा, 'तुम उसे अगर साधना से बिरत कर सको, तो बहुत अच्छा होगा, देवताओं का भी सम्मान बचेगा. जो बन सके! करो.' तब नारद ने ध्रुव के निकट जाकर अनेक प्रलोभन दिया. यह दूंगा, वह दूंगा, खिलौना दूंगा. न जाने कितना कुछ. ध्रुव तो टलनेवाला नहीं. तब नारद ने कहा कि अभी तुम बालक हो, जब बड़े होना, बूढ़े होना तो साधना करना. तब ध्रुव ने कहा- बुद्धिमान व्यक्ति कम उम्र से ही साधना में लीन हो जाते हैं; क्योंकि मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ है. पृथ्वी में कोटि-कोटि प्रकार के जीव हैं. मनुष्य की संख्या से कोटि गुणा अधिक है; किंतु मनुष्य की भांति वे भाग्यवान नहीं हैं. कारण, उनको मनुष्य शरीर नहीं मिला, न तो उनको उन्नत मन मिला. साधना करने का प्रयोजन वे नहीं समझते, क्योंकि उनकी बुद्धि बहुत पिछड़ी है. मनुष्य का शरीर पाने पर वे अनुभव करते हैं कि मानव जीवन का प्रधान और प्रथम कार्य है ईश्वर को पाने की साधना में लीन होना, बाकी समस्त कार्य गौण कार्य हैं. इसलिए जिसको मनुष्य का शरीर मिला है, वे सचमुच भाग्यवान हैं. मनुष्य का शरीर पाया है ईश्वर को पाने की साधना करने के लिए. जो ऐसा नहीं करते वे दूसरी बार मनुष्य का शरीर नहीं पाते. साधना द्वारा जिन्होंने इस जन्म को सार्थक बना डाला है, ऐसे मनुष्यों की संख्या बहुत ही कम है. हे नारद! तुम ज्ञान-वृद्ध हो, तुम मुझे क्यों परामर्श देने आये हो? मुझे मनुष्य का शरीर मिला है; अतः शिशुकाल से ही जितना संभव हो, मैं साधना में लीन रहूंगा और दीर्घकाल तक साधना करने का सुयोग पाऊंगा. **श्रीश्री आनंदमूर्ति**

आपके पत्र

मौत के जिम्मेवार कौन

बिहार में चमकी बुखार से असमय काल कवलित होने वाले बच्चों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है. सरकार का हर कदम अब तक नाकाफी साबित हुआ हैं. मौत के आंकड़े के सौ पार कर जाने और मीडिया के हो हल्ला के बाद सरकार हरकत में आयी. आज जब हम चांद और मंगल पर बसने की बात कर रहे हैं, वहां इस समस्या का स्थायी निदान नहीं निकल पाना बड़ी विडंबना कही जायेगी. इस परिस्थिति ने हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था के आधारभूत ढांचे के विकसित नहीं हो पाने के यथार्थ को परिलक्षित किया है. स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मूलभूत समस्याओं को दरकिनार कर हम विकसित होने का सपना छोड़ दें, तो बेहतर होगा. बरहाल इस मौत की जिम्मेवारी किसकी है? दम तोड़ती स्वास्थ्य व्यवस्था या फिर संवैधानिक दायित्व के प्रति उदासीनता बरत रही सरकार?

अमित अनुपम, केस्टोपुर, कोलकाता.

देश भी ताकतवर बने

खुशी की बात है कि ब्रिटिश हेराल्ड के रीडर्स पोल, 2019 ने प्रधानमंत्री मोदी को डोनाल्ड ट्रंप, व्लादिमीर पूतिन और शी जिनपिंग को पछाड़ते हुए दुनिया का सबसे ताकतवर नेता माना है. यह हम सभी के लिए बड़े गौरव की बात है. वास्तव में मोदी एक बड़े गरीब परिवार से उठे जमीनी और अनुभवी नेता हैं, जिन्हें प्रायः हर चीज के बारे में अच्छे से मालूम है. अब लोकसभा में भी उनके प्रचंड बहुमत से उनकी सरकार भी ताकतवर है. अब इस नयी ऊर्जा के बाद तो उन्हें देश को भी और ताकतवर बनाने की जरूरत है, जिसके लिए उन्हें रोजगार, जनसंख्या नियंत्रण, सुनियोजित शानदार विकास और पर्यावरण संरक्षण आदि पर युद्ध स्तर पर विशेष ऐतिहासिक कार्य करना होगा. देश में संसाधनों और जनशक्ति की कोई कमी नहीं है. देश की जनता को उनसे बड़ी आशा है.

वेद मामूरपुर, नरेला

निराशा की ओर दक्षिण अफ्रीका

दक्षिण अफ्रीका में हुए गत चुनाव में वहां की नेशनल कांग्रेस को 58 फीसदी मतों के साथ जीत मिली. तब लगा था देश में सब कुछ ठीकठाक होगा. लोग खुशहाल होंगे. अर्थव्यवस्था ठीक होगी. जीडीपी में बढ़ोतरी हो रही होगी. बेरोजगारी कम हो रही होगी, मगर यह क्या? वहां के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा इकबालिया का अचानक बयान आ गया कि देश की माली हालत ठीक नहीं है. जीडीपी पिछले एक साल में 3.2 फीसदी गिर गया है. देश के ऊपर अंतरराष्ट्रीय देशों एवं प्रतिष्ठानों का ऋण बढ़ता जा रहा है. बेरोजगारी आंकड़ों में तो 27 फीसदी, पर वास्तव में यह प्रतिशत 50 के ऊपर चला गया है. इसका मतलब देश इस समय डूबने की कगार पर है. जब नस्लभेद से लड़ाई जीत कर नेल्सन मंडेला ने सच्चे लोकतंत्र की स्थापना की थी, तब विश्व ने बड़ी उम्मीद पाली थी, मगर आज उसी देश की यह हालत देख कर मंडेला की आत्मा भी रो रही होगी. रंगभेद से तो मुक्ति मिल गयी, मगर गुरबत से देश को अब भी राहत मिलती नहीं दिख रही है.

जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

कुछ अलग

शब्दों में बड़ी ताकत होती है

श्रीप्रकाश शर्मा
टिप्पणीकार
spsharma.rishu@gmail.com

शब्दों में गजब की ताकत होती है. गहन रिसर्च के बाद दुनियाभर के मनोविश्लेषक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि शब्द महज अभिव्यक्ति के माध्यम की एक बेसिक यूनिट नहीं हैं, बल्कि ये हमारी मनोदशा को भी महती रूप से प्रभावित करते हैं. कदाचित यही कारण है कि शब्द-प्रयोग के औचित्य और अनौचित्य पर हमारे जीवन की खुशी और खामोशी निर्भर करती है. यदि हम शब्दों को उनके अर्थ की उपयुक्तता और संदर्भ की गंभीरता को बिना तौले हुए जीवन में प्रयोग करते हैं, तो हम खुद के लिए अनचाहे मुसीबतों का जाल बुनते हैं, जिससे निजात का रास्ता सहज नहीं होता है.

आज जब ह्वॉट्सएप, फेसबुक, इन्स्टाग्राम, ट्विटर इत्यादि ने हमारे जीवन में घुसपैठ कर लिया है, तो हमारी जीवन शैली, सोच के ढंग और चारित्रिक और नैतिक मूल्यों के मानकों में भी बड़ी तब्दीलियां आयी हैं. इन परिवर्तनों के साथ शब्दों के प्रयोग के संस्कार के एक अजीब संस्करण का भी आगाज हुआ है. सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की दुहाई के नाम पर जिस कदर बिना लगाम के अपने कुत्सित विचारों और झूठे समाचारों को पोस्ट किया जाता है, उन पर कमेंट किया जाता है और जितनी शीघ्रता से उन्हें शेयर किया जाता है, यह हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय है. पत्र-पत्रिकाओं में छपे कार्टूनों और लेखों के माध्यम से युक्तिगत आक्षेपों के साथ-साथ उच्च पदों पर सार्वजनिक हस्तियों और सेलिब्रिटीज की निजता और शालीनता को तार-तार करने की घातक प्रवृत्तियों ने सामाजिक सद्भाव और परस्पर प्रेम-भाव में जहर घोलने का काम किया है. स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार को जहां जीवन को डिग्निटी प्रदान करने के लिए सुनिश्चित किया गया था, आज उसी के दुरुपयोग के कारण जीवन में आत्मसम्मान का तेजी से अपहरण हुआ है.

प्रश्न उठता है कि आखिर सरेआम अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्या कोई लक्ष्मण रेखा नहीं होनी चाहिए? जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक और मनोविश्लेषक फ्रेडरिक नीत्शे ने एक बार कहा था, 'मुझे केवल कागज का एक पन्ना और जिससे लिखा जाये ऐसी कोई चीज मिल जाये, तो मैं दुनिया को ऊपर से नीचे तक घुमा सकता हूं.' आशय यही है कि इस दुनिया में मन के अनियंत्रित भाव से घातक कोई चीज नहीं होती है. मन में उपजे विचारों को यदि हवा दे दी जाये, तो इसकी लपट में दुनिया को खाक करने की क्षमता होती है. विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में महात्मा गांधी के इस विचार में दुनिया के वर्तमान संकट का अचूक समाधान छुपा हुआ है, 'समाचारपत्रों में बड़ी शक्ति होती है, ठीक वैसी ही जैसी कि पानी के जबरदस्त प्रवाह में होती है. इसे खुला छोड़ देंगे तो गांव के गांव बहा देगा. उसी तरह निरंकुश कलम समाज के विनाश का कारण बन सकती है. लेकिन अंकुश भीतर का होना चाहिए, बाहर का अंकुश तो और भी जहरीला होगा.' इसलिए अपने भावों को व्यक्त करने के लिए अंकुश कलम पर नहीं, शब्दों पर नहीं, बल्कि मन पर लगाने की दरकार है.

देश दुनिया से

ऐतिहासिक महत्व की हैं चीन की उपलब्धियां

बीते सत्तर साल में चीन के लोगों ने ऐतिहासिक उपलब्धियां रची हैं, जिनसे दुनिया लाभान्वित हुई है. यह बात वियतनाम के एक विशेषज्ञ ने चीन की सरकारी समाचार एजेंसी सिन्हुआ के साथ एक साक्षात्कार में कही है. वियतनाम के विशेषज्ञ गुएन विन्ह क्वांग 'वियतनाम-चीन फ्रेंडशिप एसोसिएशन' के अध्यक्ष भी हैं और चीन में वियतनामी राजनयिक होने के नाते वह चीन के दर्जनों राज्यों का दौरा कर चुके हैं, और चीन एवं चीन के लोगों की मेहनत को और तेजी से बदलते चीन को बेहद करीब से देखा है. वियतनाम के थिंक टैंक माने जानेवाले क्वांग वर्तमान में सेंटर फॉर स्ट्रेटजिक स्टडीज एंड इंटरनेशनल डेवलपमेंट के वरिष्ठ सलाहकार भी हैं. उन्होंने बताया कि चीन में सबसे शानदार विकास किसी क्षेत्र में है, तो वह इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में है. चीन की एक कहावत है- 'अमीर बनना है, तो पहले सड़कें बनाओ'. इस कहावत की बात करते हुए क्वांग ने कहा कि चीन में जब भी कहीं सड़कों का निर्माण हुआ, एक नया नगर या फिर एक नया क्षेत्र उभर आया. इस तरह के विकास ने चीन के लोगों की जिंदगी को शानदार बना दिया है. दुनिया के बाकी देशों के लिए भी यह एक मिसाल की तरह है, जिससे दुनिया को सीखना चाहिए.

GLOBAL TIMES

कार्टून कोना

साभार : कार्टूनमूवमेंटडॉटकॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है